

---

Shrikrishna Stutih

श्रीकृष्णस्तुतिः

Document Information



---

Text title : shrIkRRiShNastutiH by Shri Vishveshvara Tirtha Swami

File name : shrIkRRiShNastutiHvishveshatIrtha.itx

Category : vishhnu, krishna, panchaka

Location : doc\_vishhnu

Author : Shri Vishveshvara Tirtha Swami

Latest update : April 21, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

April 21, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीकृष्णस्तुतिः



दुर्वारदेवारिनिकायकालं  
संसारसिन्धोरपरं च कूलम् ।  
कृष्णाप्रदत्ताक्षयसन्दुकूलं  
भवार्णवस्योत्तरणानुकूलम् ॥ १ ॥

तमालनीलं धृतहेममालं  
विश्वस्य मूलं विविधोरुलीलम् ।  
भैष्मीविलोलं भुवनैकपालं  
भक्तालवालं प्रणमामि बालम् ॥ २ ॥

उलूखलं दामवरेण बद्धा  
कर्षन् भवान् भूमिरुहौ न्यपातयत् ।  
निबध्य पाशे च कलिं खलं हरे  
विभिन्ध्यविद्याद्वयमद्य सद्यः ॥ ३ ॥

अपारे क्षीरोदे पृथुमथनसंसाधितसुधां  
हरिनैवागृह्णात् सुरसुमथितां किन्तु सुगवाम् ।  
पयः पायम्पायं रुचिरनवनीतं च समदन्  
प्रपेदे नो तृप्तिं बत भगवतः पश्यत कृपाम् ॥ ४ ॥

नमामि कृष्णं प्रविलुप्ततृष्णं  
स्मरामि बालं मनसा सदाऽलम् ।  
भजामि देवं दुरितौघदावं  
दयाभिरामं दयितं निकामम् ॥ ५ ॥

पञ्चमे स्वीयपर्यायकृष्णसेवामहोत्सवे ।  
विश्वेशतीर्थयतिना रचितं पद्यपञ्चकम् ॥ ६ ॥

इति स्वामीविश्वेशतीर्थयतिना रचिता श्रीकृष्णस्तुतिः समाप्ता ।



*Shrikrishna Stutih*

pdf was typeset on April 21, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

